आधुनिक संस्कृत विद्वान् हर्षदेवमाधव द्वारा विरचित 'हाइकु'।

'हाइकु' काव्यकला का सूक्ष्माशिल्प है। यह अत्यंत लघु किन्तु कवि-प्रतिभा का पुरा भाव प्रकट करने वाली काव्यविधा है। यह जापानी काव्य विधा है जो मध्ययुग से लिखा जाता रहा है। हाइकु में शब्द कम, वर्णन सादा एवं व्यंजना को अपरिमित अपार अवकाश दिया जाता है। हाइकु में 17 अक्षरों को विशेष महत्वपूर्ण माना जाता है जिसके प्रथम और तृतीय चरण में 5-5 चरण में 7 अक्षर होते हैं।

हाइकु को एक-श्वासीकाव्य(One Breathe poem) कहा जाता है। संस्कृत कविता में हाइकु की सर्वप्रथम अवतारणा का श्रेय हर्षदेव माधव को है। हाइकु के माध्यम से गागर में सागर भरा जा सकता है। हाइकु के माध्यम से माधव जी ने समाज में व्याप्त विषमता, असंतोष, दुःख कलह, असमानता भावहीनता इत्यादि का मार्मिक चित्रण किया है।

हाइकु

वेदना

वेदनायाः.....करोति। (In Book)

वेदना निःशब्द(बिना शब्द के) है इसलिए वह मौन रहकर(**मौनमये**) खाली चेक पर(**रिक्तधनादेश पत्रे**) मानो हस्ताक्षर करती है(**हस्ताक्षरं करोति**)। यहां कवि के चेतना जाल को मथने के लिए वेदना निर्वस्त्र होकर छलांग लगाती है और यह मौन और खाली चेक पर हस्ताक्षर करती है।

'वेदना' कविता मानवमन की दुःखद आंतरिकभाव को अभिव्यक्ति प्रदान करती है। जब व्यक्ति आंतरिक रूप से पीडित होता है तब वह मानो एक खाली चेक के समान होता है जिसे कोई भी व्यक्ति आकर उसे आहत कर सकता है।

त्वम्

त्वम्.....पुष्परूपेण । (In book)

'तुम' अर्थात मेरे अतिरिक्त सब कुछ और मैं अर्थात् गुलदस्ते में पुष्प रूप तुम ।

'त्वम्' कविता में 'त्वम्' और' अहं' की अनूठी परिभाषा देखने को मिलती है जहां 'त्वम्' और 'अहम्' एक-दूसरे का पर्याय प्रतीत होते हैं । दोनों में कोई अंतर नहीं है बल्कि वे एक ही सिक्के के दो पहलू हैं ।

स्नानगृहे

स्नागृहं.....पितृगृहं भवति । (In Book)

घर के कामों से फुरसत पाई हुई थकी-मांदी वधू स्नानघर में जाकर बिना शब्द किए(हिचक-हिचकर) रोती है मानो उस समय वह स्नानघर ही उसका मायका हो(पिता का घर हो) ।

'स्नानगृहे' कविता में कवि ने अति सामान्य विषय के माध्यम से नववधू की भाव विह्वल करुण मनोदशा का चित्रण किया है जिसे पितृगृह सदृश विश्रान्ति स्नानघर में मिलती है । जहां वह बिना शब्द के अंदर ही अंदर बिलख कर रोती है और फिर अपने कर्तव्य पालन में तत्पर हो जाती है । इससे उसकी स्थितप्रज्ञता एवं समत्वबुद्धि सहज अभिव्यंजित हो जाती है ।

स्नानगृहे.....कृत्वा स्नाति । (In Book)

स्नानघर में गर्मजल दुख सदृश और शीतलजल सुख सदृश है । वह एक ज्ञानी के समान सुख और दुख दोनों को समान भाव से स्वीकार कर स्नान करती है ।

'स्नानगृहे' कविता संपूर्ण भारतीयता का निरूपण करता है । निःशब्द रूदन सदियों से चली आ रही भारतीय नारियों की सहनशीलता की प्राकृतिक परंपरा का ही प्रकटीकरण है । जहां स्नानघर का ठंडा एवं गर्म जल ज्ञानी को सुख-दुख की अनुभूति कराता है वहीं दूसरी ओर वह स्नानगृह दुखियारी नववधू के लिए उसका मायका बन जाता है ।

खनिः

खनेः.....प्रज्वालयति ।

खान से काला कोयला बाहर आता है, वह हरे पत्ते को देखता है तब मानो शोक से अपने आप को जलाता है ।

'खनिः' कविता में श्रमिकवर्ग(मज़दुरों) एवं शोषितजन का वर्णन है जो अत्यधिक श्रम करके भी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ हैं । यह कविता समाज में व्याप्त विषमता और विसंगति की ओर इशारा करती है ।

मृत्युः १

सुर्यो.....मे पादाङ्गुष्ठः ।

सूर्य मेरी आंख है, हवा मेरी श्वांस है, समुद्र मेरा हृदय है अर्थात् मेरे हृदय की विशालता समुद्र सदृश है, झरने मेरी धमनियाँ हैं । हे मृत्यु! कल तक मैं वामन(बोना) था, आज तुम्हारे सिर पर मेरे पैर का अंगूठा है ।

अंतिम कविता **'मृत्युः १'** और **'मृत्युः २'** जीवन की नश्वरता एवं क्षणभंगुरता को व्यक्त करती है । जो व्यक्ति इस सत्य को समझ जाता है, इसे स्वीकार कर लेता है, वह निर्भीक हो जाता है । मौत से उसे डर नहीं लगता बल्कि मौत को हमेशा सत्य एवं समक्ष जानकर वह कुपथ पर चलने एवं गलत काम करने से डरता है ।

मृत्युः २

मृत्युः.....पञ्चदीपाः ।

मृत्यु मल्हार राग गाती है, पंचदीप अर्थात् पंच ज्ञानेंद्रियां शांत हो रही हैं, पंचदीप मानो चुकने को है अर्थात् जीवनदीप बुझ रहा है ।

प्रस्तुत पद्य से यह अभिप्राय है कि मृत्यु के नाम से मुझे भय लगता था, आंखों के आगे अंधकार छा जाता था। परंतु अब मैंने जीवन के थपेड़ों, संघर्षों से जूझना और जूझकर आगे निकलना सीख लिया है, मानो जीने का ढंग आ गया है। अब मैं मौत से नहीं डरता बल्कि मौत से खेलता हूँ। पग-पग पर मौत दिखाई देती है परंतु उसका डटकर मुकाबला करता हूँ और अंत समय में शांतिपूर्वक प्राण त्यागना चाहता हूँ।